REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 9 | JUNE - 2023

विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनकी समायोजन क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

Khirod Chandra Mahto[1] and Dr. Pravat Kumar[2]
[1]Research Scholar (Ph.D) , Department of Education, Sainath University,Jirabar, Ranchi, Jharkhad.
[2]Assistant Professor, Department of Education, Sainath University, Jirabar, Ranchi Jharkhand.

सारांश

राष्ट्र की समृद्धि एवं वैभवशाली सम्पन्नता का आधार शिक्षा है, जो हमारी क्षमताओं का निरंतर एवं सामंजस्यपूर्ण विकास कर उसे उत्कृष्ठ बनाती है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में नैतिक मूल्यों का महत्व सदैव रहा है। विद्यार्थियों का आचरण इन मूल्यों के संदर्भ में स्वअनुशासित हो यह प्रयास अनवरत करते हुए बालकों में समायोजन क्षमता विकसित की जानी आज की महती आवश्यकता है। शिक्षा मानव की जन्मजात शक्तियों का विकास करती है। विद्यार्थियों के ज्ञान एवं कला–कौषल में वृद्धि होती है इससे सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज का निर्माण होता है। प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनकी समायोजन क्षमता पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

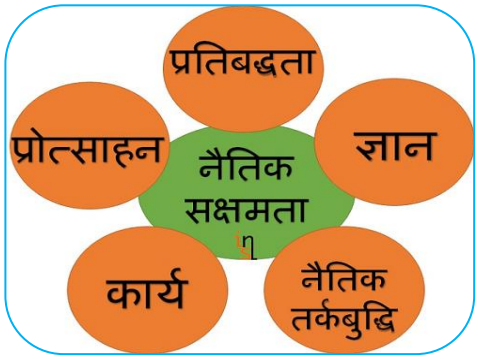

मुख्य बात : नैतिक मूल्यों समायोजन.

प्रस्तावना

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। शिक्षा से ही विद्यार्थियों में सफल समायोजन की क्षमता पैदा हो सकती है। शिक्षा व्यक्ति में समाज और पर्यावरण से समायोजन करने की क्षमता उत्पन्न करने का कार्य दो प्रकार से करती है। प्रथम तो शिक्षा व्यक्ति को ऐसा विवेक, ऐसी बुद्धि देती है, जिससे वह घटनाओं का व्यावहारिक विश्लेषण करके परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार कर सके तथा दूसरो ओर वह व्यक्ति को इतना कार्यकुशल बनाती है कि वह प्रतिकूल परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना सके। समाज द्वारा निर्धारित नियमों व सिद्धांतों का पालन करना ही नैतिकता है एवं इन नियमों व सिद्धांतों के अनुसार आचरण करने की शक्ति ही चरित्र कहलाती है। यही कारण है कि सभी समाज, शिक्षा के द्वारा व्यक्ति का नैतिक एवं चारित्रिक विकास करने का प्रयत्न करते हैं। व्यक्ति का नैतिक एवं चारित्रिक विकास करना शिक्षा का प्रमुख कार्य है। प्रत्येक बालक में व्यक्तिगत विभिन्नता पाई जाती है। उनमें कुछ न कुछ शक्ति एवं क्षमतायें होती हैं। यदि इन शक्तियों एवं क्षमताओं की दिशा समाजोन्मुखी हो ता समाज व देश के लिये वह बालक प्रेरक और उन्नति कारक बन जाता है। अतः विभिन्न परीक्षणों के माध्यम से भिन्न–भिन्न विद्यालयों में अध्ययन करने वाले इन विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता का मूल्यांकन कर बालक के व्यवहार में आवश्यक परिवर्तन लाया जा सकता ह।

शोध के उदेश्य –

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गए –

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों की तुलना करना।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता की तुलना करना।
3. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनकी समायोजन क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
4. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनकी समायोजन क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव की तुलना करना।

परिकल्पनाएँ –

प्रस्तुत शोध हेतु निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया :–

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
3. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता में धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।
4. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं उनकी समायोजन क्षमता के बीच सहसंबंध म सार्थक अंतर पाया जायेगा।

शोध प्रक्रिया – प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का उपयोग किया गया है।

न्यादर्श –

पश्चिमी सिंहभूम जिले के चक्रधरपुर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की विभिन्न शालाओं के विद्यार्थियों का यादृच्छिक चयन निम्नानुसार किया गया –

सारणी क्रमांक – 1

क्र	विद्यालय का नाम	प्रकार	छात्र	छात्रायें	योग
1	जलवे देवी सरस्वती शिशु विद्यामंदिर. सिलफोडी. चक्रधरपुर. **पश्चिमी सिंहभूम**. झारखंड.	ग्रामीण	25	25	50
2	राजकीय कृत उच्च विद्यालय, रोलाडीह चक्रधरपुर. **पश्चिमी सिंहभूम**. झारखंड.	ग्रामीण	25	25	50
3	कारमेल उच्च विद्यालय चक्रधरपुर. **पश्चिमी सिंहभूम** झारखंड.	शहरी	25	25	50
4	मारवाड़ी उच्च विद्यालय चक्रधरपुर. **पश्चिमी सिंहभूम**. झारखंड.	शहरी	25	25	50
		योग –	100	100	200

उपकरण –

आँकड़ों के संकलन हेतु निम्नलिखित प्रमाणिक उपकरणों (प्रश्नावलियों) का उपयोग किया गया है –

1. नैतिक मूल्य मापनी– डॉ. श्रीमती प्रतिभा देवांगन, डॉ. बी.जी. सिंह एवं डॉ. पी.के. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित नैतिक मूल्य मापनी इस परीक्षण में 45 नैतिक मूल्य थे, जिनमें से 10 मूल्यों को परीक्षण के लिए लिया गया।
2. समायोजेजन क्षमता मापनी– A.K.P. Sinha and R.P. Singh Adjustment Inventory for School Students (AISS) Hindi का प्रयोग किया गया है। इसमें कुल 60 प्रश्न हैं। इस परीक्षण के तीन भाग हैं, प्रत्येक भाग में बीस–बीस प्रश्न है।

सांख्यिकी विश्लेषण

प्रस्तुत लघु शोध में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों और समायोजन क्षमता का परीक्षण किया गया तथा प्राप्तांकों को व्यवस्थित करने के पश्चात् उनका सारणीयन किया गया।

परिकल्पना क्रमांक – 01

उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक – 01
शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य परीक्षण के प्राप्तांकों का सारणीयन

क्र	विद्यार्थी	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात
1	शहरी	100	36.45	5.6	2.36
2	ग्रामीण	100	34.45	6.33	

व्याख्या–

नैतिक मूल्य परीक्षण का प्रशासन शहरी क्षेत्र के 100 विद्यार्थियों तथा ग्रामीण क्षेत्र के 100 विद्यार्थियों पर किया गया है। शहरी विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का मध्यमान 36.45 और प्रमाणिक विचलन 5.6 प्राप्त हुआ तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का मध्यमान 34.45 और प्रमाणिक विचलन 6.33 प्राप्त हुआ । 198 df (स्वतंत्रता की कोटि) पर सार्थकता के लिए आवश्यक क्रांतिक अनुपात का मान 5% विश्वास स्तर पर 1.97 है, जबकि विद्यार्थियों से प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 2.36 है जो कि 5% विश्वास पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान से अधिक है। अतः शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 01 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक – 02
शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता परीक्षण के प्राप्तांकों का सारणीयन

क्र	विद्यार्थी	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात
1	शहरी	100	17.2	6.88	1.98
2	ग्रामीण	100	15.5	5.31	

व्याख्या–

समायोजन क्षमता परीक्षण का प्रशासन शहरी क्षेत्र के 100 विद्यार्थियों तथा ग्रामीण क्षेत्र के 100 विद्यार्थियों पर किया गया है। शहरी विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का मध्यमान 17.2 और प्रमाणिक विचलन 6.88 प्राप्त हुआ तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का मध्यमान 15.5 और प्रमाणिक विचलन 5.31 प्राप्त हुआ । 1.98 df स्वतंत्रता की कोटि पर सार्थकता के लिए आवश्यक क्रांतिक अनुपात का मान 5% विश्वास स्तर पर 1.97 है, जबकि विद्यार्थियों से प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 1.98 है जो कि 5% विश्वास पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान से अधिक है। शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 02 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक 03 –

उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता में धनात्मक सहसंबंध पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक–3

विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता में सह–संबंध परीक्षण के प्राप्तांकों का सारणीयन

क्र	प्रदत्त		प्रदत्तों की संख्या	सह संबंध गुणांक
1	शहरी विद्यार्थी	छात्र	50	0.82
		छात्रा	50	
2	ग्रामीण विद्यार्थी	छात्र	50	0.60
		छात्रा	50	

व्याख्या–

शहरी विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं उनकी समायोजन क्षमता के मध्य सह–संबंध गुणांक का मान 0.82 प्राप्त हुआ। अतः शहरी विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता में अति–उच्च धनात्मक सह–संबंध है। ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं उनकी समायोजन क्षमता के मध्य सह–संबंध गुणांक का मान 0.60 प्राप्त हुआ। अतः ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता में साधारण धनात्मक सह–संबंध पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 03 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक–04

उच्च प्राथमिक स्तर शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता के बीच सहसंबंध में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक – 04

शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं उनकी समायोजन क्षमता के बीच सह–संबंध में अंतर की सार्थकता का सारणीयन

क्र.	प्रदत्त	सहसंबंध गुणांक		अंतर की सार्थकता
		Pearson's r	Fisher's z	σdz
1.	शहरी विद्यार्थी	0.82	1.16	2.99
2.	ग्रामीण विद्यार्थी	0.62	0.73	

व्याख्या–

शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं उनकी समायोजन क्षमता के मध्य सह–संबंध के लिए अंतर की सार्थकता का मान 2.99 प्राप्त हुआ, जो 5% विश्वास स्तर पर अंतर की सार्थकता के लिए आवश्यक मान 0.138 से अधिक है। अतः शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं उनकी समायोजन क्षमता के बीच सहसंबंध में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 04 की पुष्टि होती है।

निष्कर्ष –

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में अंतर पाया गया ।
2. उच्च प्राथमिक. स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में अंतर पाया गया।
3. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता में अति–उच्च धनात्मक सह–संबंध एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता में साधारण धनात्मक सह–संबंध को

पाया गया। अतः कहा जा सकता है कि जिन छात्रों का नैतिक मूल्य स्तर अच्छा है उनकी समायोजन क्षमता भी उच्च कोटि की है।

4. शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं उनके समायोजन क्षमता के मध्य सहसंबंध में सार्थक अंतर पाया गया ।

सुझाव –

1.शिक्षकों को अपनी पूर्ण योग्यता का सदुपयोग करते हुए विद्यार्थियों की समस्या को हल करने में सार्थक पहल कर उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। समस्या का समाधान होने पर ही विद्यार्थी अपने आपको समायोजित कर पायेंगे।

2. विद्यालय में अध्ययन के अलावा अन्य गतिविधियों के आयोजन को निष्चित करने हेतु ठोस नियम निर्धारित किए जाने चाहिए।

3. नैतिक मूल्यों के विकास के लिये पाठ्यवस्तु में इससे संबंधित सामग्री समाविष्ट की जानी चाहिए।

4. शिक्षक द्वारा स्वयं नैतिक मूल्यों का पालन करते हुए विद्यार्थियों के सम्मुख एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए।

संदर्भ गंथ –

1. जायसवाल, सीताराम ,समायोजन विज्ञान 1999, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा
2. कपिल, डॉ. एच.के., अनुसंधान विधियाँ (व्यवहारिक विज्ञानों में) 1989, हर प्रकाश भार्गव, आगरा
3. माथुर, एस.एफ., शिक्षा मनोविज्ञान 1991, शिक्षा विभाग, आर.ई.आई. ट्रेनिंग कॉलेज दयालबाग, आगरा
4. पांडे, डॉ. राम शकल, मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य 1982, हर प्रकाश भार्गव, आगरा
5. सरीन डॉ. शशिकला, शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ 1998, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
6. वशिष्ठ, बिजेन्द्र कुमार, शिक्षाशास्त्र की प्रारंभिक रूपरेखा 1989, आर. लाल बुक डिपो मेरठ